सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-3: ग्रामीण क्षेत्र पर शासन चलाना

SHIVOM CLASSES - 8696608541

कम्पनी दिवान बन गई

12 अगस्त 1765 को मुग़ल बादशाह ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल का दिवान तैनात किया। बंगाल की दीवानी हाथ आ जाना अंग्रेजों के लिए एक निश्चय ही एक बड़ी घटना थी। दिवान के तौर पर कंपनी अपने नियंत्रण वाले भूभाग के आर्थिक मामलों की मुख्य शासक बन गई थी।

कम्पनी की आमदनी

कंपनी दिवान तो बन गई थी लेकिन अभी भी खुद को एक व्यापारी ही मानती थी। कंपनी भारी-भरकम लगान तो चाहती थी लेकिन उसके आकलन और वसूली की कोई नियमित व्यवस्था करने में हिचकिचा रही थी। उसकी कोशिश यही थी कि वह ज्यादा से ज्यादा राजस्व हासिल करे और कम से कम कीमत पर बढिया सूती और रेशमी कपड़ा खरीदे।

– पाँच साल के भीतर बंगाल में कंपनी द्वारा खरीदी जाने वाली चीजों का कुल मूल्य दोगुना हो चुका था।
– 1865 से पहले कंपनी ब्रिटेन से सोने चाँदी का आयात करती थी और इन चीजों के बदले सामान ख़रीदती थी।
– अब बंगाल में इकट्ठा होने वाले पैसे से ही निर्यात के लिए चीजों ख़रीदी जा सकती थीं।

खेती में सुधार की जरूरत

कंपनी ने 1793 में स्थायी बंदोबस्त लागू किया। इस बंदोबस्त की शर्तो के हिसाब से राजाओं और तालुकदारो को जमींदारों के रूप में मान्यता दी गई। उन्हें किसानों से लगान वसूलने और कंपनी को राजस्व चुकाने का जिम्मा सौंपा गया ।

मृदा स्वास्थ्य संवर्धन

आप कृषि मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोणों पर विचार कर सकते हैं:

- मिट्टी की संघनन से
- बचेंटिलेज कम करें
- कवर फसलों को बढ़ाएं

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- फसल रोटेशन पर ध्यान केंद्रित करें
- कार्बनिक संशोधन का प्रयोग करें

सिंचाई जल आपूर्ति बढ़ाना और प्रबंधन

शुरुआती फसल के विकास के दौरान पानी की कमी से उत्पादन में कमी या पूरे उत्पादन की विफलता हो सकती है। बढ़ते मौसम के दौरान फसल की जरूरतों को पूरा करने के लिए, अतिरिक्त पानी की आपूर्ति कृत्रिम रूप से की जानी चाहिए। सिंचाई जल आपूर्ति संवर्द्धन और वर्षा जल संचयन की स्थापना करके, आप फसल के लिए आवश्यक पानी की मात्रा की आपूर्ति कर सकते हैं। इस तकनीक का प्राथमिक लक्ष्य जल आपूर्ति को नियंत्रित करना और स्मार्टफोन का उपयोग करके पौधों का निरीक्षण करना है।

SHIVOM CLASSES 8696608541

समस्या

स्थयी बंदोबस्त ने भी समस्या पैदा कर दी। कंपनी के अफ़सरो ने पाया की अभी भी जमींदार जमीन में सुधार के लिए खर्चा नहीं कर रहे थे। असल में , कंपनी ने जो राजस्व तय किया था वह इतना

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

ज़्यादा था की उसको चुकाने में जमीदारों को भारी परेशानी हो रही थी। जो जमींदार राजस्व चुकाने में विफल हो जाता था उसकी जमींदारी छीन ली जाती थी। बहुत सारी जमींदारियों को कंपनी बाकायदा नीलम कर चुकी थी। दूसरी तरफ , गाँवो में किसानों को यह व्यवस्था बहुत दमनकारी दिखाई दी। किसान लगान चुकाने के लिए अकसर महाजन से कर्जा लेना पड़ता था। अगर वह लगान नहीं चुका पाता था तो उसे पुश्तैनी जमीन से बेदखल कर दिया जाता था।

महल

ब्रिटिश राजस्व दस्तावेजों में महल एक राजस्व इकाई थी। यह एक गाँव या गाँवो का एक समूह होती थी।

SHIVOM CLASSES 8696608541

एक नयी व्यवस्था

उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में बंगाल प्रेज़िडेंसी के उत्तर-पश्चिमी प्रांतो के लिए होल्ट मैकेंजी नामक अंग्रेज़ ने एक नयी व्यवस्था तैयार की जिसे 1822 में लागू किया गया। मैकेंजी गाँव के एक-एक खेत के अनुमानित राजस्व को जोड़कर हर गाँव या ग्राम समूह (महाल) से वसूल होने वाले राजस्व का हिसाब लगाया जाता था।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

महलवारी बंदोबस्त

जिसमें राजस्व इकट्ठा करने और उसे कंपनी को अदा करने का जिम्मा जमींदार की बजाय गाँव के मुखिया को सौंपा दिया गया। इस व्यवस्था को महलवारी बंदोबस्त का नाम दिया गया।

रैयतवारी व्यवस्था

ब्रिटिश नियंत्रण वाले दक्षिण इलाकों में भी स्थायी बंदोबस्त की जगह नयी व्यवस्था लागू किया गया जिसे रैयतवार (या रैयतवारी) का नाम दिया गया। रीड और मुनरो को लगता था की दक्षिण में परंपरागत जमींदार नहीं थे। इसलिए उन्हें सीधे किसानों (रैयतों) से ही बंदोबस्त करना चहिए जो पीढ़ियों से जमीन पर खेती करते आ रहे हैं। मुनरो का मानना था की अग्रेजों पिता की भाँति किसानों की रक्षा करनी चाहिए।

यूरोप के लिए फ़सले

अठाहरवीं सदी के आखिर तक कंपनी ने अफ़ीम और नील की खेती पर ज़ोर लगा दिया था। इसके बाद अन्य फसलें जैसे बंगाल में पटसन , असम में चाय , पंजाब में गेंहूँ , महाराष्ट्र में कपास , मद्रास में चावल , सयुंक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश में) में गन्ना।

भारतीय नील की माँग क्यों थी

नील का पौधा मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय इलाकों में ही उगता है। तेरहवीं सदी तक इटली , फ्रांस और ब्रिटेन के कपड़ा उत्पादक कपड़े की रँगाई के लिए भरतीय नील का इस्तेमाल कर रहे थे। उस समय भरतीय नील की बहुत थोड़ी मात्रा ही यूरोपीय बाज़ारों में पहुँचती थी।यूरोप में लोग कपड़े को रँगने वाले तो नील को ही पसंद करते थे। नील से बहुत चमकदार नीला रंग मिलता था। इसलिए भरतीय नील की माँग बढ़ने लगी।

अठारहवीं शताब्दी के आखिर तक भरतीय नील की माँग और बढ़ गई। ब्रिटेन में औद्योगीकरण का युग शुरू हो चुका थाऔर उसके कपास उत्पादन में भारी इजाफ़ा हुआ। अब कपड़ो की रँगाई की माँग और तेजी से बढ़ने लगी। बंगाल में नील की खेती तेज़ी से फैलने लगी थी। बंगाल में पैदा होने वाला नील दुनिया के बाजारों में छा गया था।1778 में ब्रिटेन द्वारा आयत किए गए नील में

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

भरतीय नील का हिस्सा केवल 30 प्रतिशत था। 1810 में ब्रिटेन द्वारा आयत किए गए नील में भारतीय नील का हिस्सा 95 प्रतिशत हो चुका था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

बागान

एक विशाल खेत जिस पर बागान मालिक बहुत सारे लोगों से जबरन काम करवाता था। कॉफी , गन्ना , तंबाकू , चाय , और कपास आदि।

गुलाम

ऐसा व्यक्ति जो किसी दास-स्वामी की संपत्ति होता है। गुलाम के पास कोई आज़ादी नहीं होती , उसे अपने मालिक के लिए काम करना होता है।

- दास, नौकर (जैसे—कुतुबद्दीन ऐबक ने ग़ुलामवंश की नींव डाली)।
- ताश का एक पत्ता जिसपर ग़ुलाम का चित्र बना होता है (जैसे—पान का गुलाम)।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

नील की खेती कैसे होती थी

भिन्न भिन्न स्थानों में नील की खेती भिन्न भिन्न ऋतुओं में और भिन्न भिन्न रीति से होती है। कहीं तो फसल तीन ही महीने तक खेत में रहते हैं और कहीं अठारह महीने तक। जहाँ पौधे बहुत दिनों तक खेत में रहते हैं वहाँ उनसे कई बार काटकर पत्तियाँ आदि ली जाती हैं। पर अब फसल को बहुत दिनों तक खेत में रखने की चाल उठती जाती है।

रैयत

रैयत व्यवस्था के तहत बागान मालिक रैयतों के साथ एक अनुबंध (सट्टा) करते थे। कई बार वे गाँव के मुखियाओं को भी रैयतों की तरफ से समझौता करने के लिए बाध्य कर देते थे। जो अनुबंध पर दस्तखत कर देते थे उन्हें नील उगाने के लिए कम ब्याज़ दर पर बागान मालिकों से नक़द कर्जा मिला जाता था। बागान मालिक बीज उपकरण मुहैया कराते थे जबकि मिट्टी को तैयार करने , बीज बोने और फ़सल की देखभाल करने की जिम्मा काश्तकारों के ऊपर रहता था।

बीघा

जमीन की एक माप। ब्रिटिश शासन से पहले बीघे का आकार अलग-अलग होता था। बंगाल में अंग्रेजो ने इसका क्षेत्रफल करीब एक तिहाई एकड़ तय कर दिया था। नील विद्रोह :- 1859 में बंगाल के हजारों रैयतों ने नील की खेती से इनकार कर दिया। जैसे-जैसे विद्रोह फैला , रैयतों ने बागान मालिकों को लगान चुकाने से भी इनकार कर दिया। रैयतों ने कसम खा ली कि न तो वे

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

नील की खेती के लिए कर्जा लेंगे और न ही बागान मालिकों के लठियालों – लाठीधारी गुंडों -से डरेंगे।

SHIVOM CLASSES
8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 37)

प्रश्न 1 निम्नलिखित के जोड़े बनाएँ:-

रैयत – ग्राम समूह

महाल – किसान

निज – रैयतों की जमीन पर खेती

रैयती – बागान मालिकों की अपनी जमीन पर खेती

उत्तर –

रैयत – किसान

महाल – ग्राम समूह

निज – बागान मालिकों की अपनी जमीन पर खेती

रैयती – रैयतों की जमीन पर खेती

प्रश्न 2 रिक्त स्थान भरें :-

(क) यूरोप में वोड उत्पादकों यह ___ से अपनी आमदनी में गिरावट का ख़तरा दिखाई देता था।

(ख) अठारहवीं सदी के आखिर में ब्रिटेन में नील की माँग ___ के कारण बढ़ने लगी।

(ग) ____ की खोज से नील की अंतर्राष्ट्रीय मांग पर बुरा असर पड़ा।

(घ) चम्पारण आंदोलन _____ के ख़िलाफ़ था।

उत्तर –

(क) यूरोप में वोड उत्पादकों यह नील के आयात से अपनी आमदनी में गिरावट का ख़तरा दिखाई देता था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(ख) अठारहवीं सदी के आखिर में ब्रिटेन में नील की माँग औद्योगिकरण के कारण बढ़ने लगी।

(ग) कृत्रिम रंगों की खोज से नील की अंतर्राष्ट्रीय मांग पर बुरा असर पड़ा।

(घ) चम्पारण आंदोलन नील बाग़ान मालिकों के ख़िलाफ़ था।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 38)

प्रश्न 3 स्थायी बंदोबस्त के मुख्य पहलुओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर – स्थायी बंदोबस्त एक भूमि प्रबंध था। इसे 1793 में बंगाल में लागू किया। इस बंदोबस्त की शर्तों के हिसाब से राजाओं और तालुकदारों को जमींदारों के रूप में मान्यता दी गई। उन्हें किसानों से लगान वसूलने और कंपनी को राजस्व चुकाने का जिम्मा सौंपा गया। उनकी ओर से चुकाई जाने वाली राशि स्थायी रूप से तय कर दी गई थी। इसका मतलब यह था कि भविष्य में कभी भी उसमें इजाफा नहीं किया जाना था। अंग्रेजों को लगता था कि इससे उन्हें नियमित रूप से राजस्व मिलता रहेगा और जमींदारों को जमीन में सुधार के लिए खर्च करने का प्रोत्साहन मिलेगा। उन्हें लगता था कि राज्य की ओर से राजस्व की माँग बढ़ने वाली नहीं थी इसलिए जमींदार बढ़ते उत्पादन से फायदे में रहेंगे।

समस्याएँ :- अभी भी जमींदार जमीन में सुधार के लिए खर्चा नहीं कर रहे थे। असल में कंपनी ने जो राजस्व तय किया था वह इतना ज्यादा था कि उसको चुकाने में जमींदारों को भारी परेशानी हो रही थी। जो जमींदार राजस्व चुकाने में विफल हो जाता था उसकी जमींदारी छीन ली जाती थी। बहुत सारी जमींदारियों को कंपनी बाकायदा नीलाम कर चुकी थी। उन्नीसवीं सदी के पहले दशक तक हालात बदल चुके थे। बाजार में कीमतें बढ़ीं और धीरे – धीरे खेती का विस्तार होने लगा। इससे जमींदारों की आमदनी में तो सुधार आया लेकिन कंपनी को कोई फायदा नहीं हुआ क्योंकि कंपनी तो हमेशा के लिए राजस्व तय कर चुकी थी। अब वह राजस्व में वृद्धि नहीं कर सकती थी लेकिन जमींदारों को अभी भी जमीन की बेहतरी में कोई दिलचस्पी नहीं थी उनमें से कुछ तो बंदोबस्त के शुरुआती सालों में ही अपनी जमीन गँवा चुके थे। लगान चुकाने के लिए उन्हें प्रायः महाजन से क़र्जा लेना पड़ता था। यदि वह लगान नहीं चुका पाता था तो उसे पुश्तैनी ज़मीन से बेदखल कर दिया जाता था।

प्रश्न 4 महालवारी व्यवस्था स्थायी बंदोबस्त के मुकाबले कैसे अलग थी ?

SHIVOM CLASSES 8696608541

उत्तर – बंगाल प्रेजिडेंसी के उत्तर पश्चिमी प्रांतों के लिए होल्ट मैकेंजी नामक अंग्रेज़ ने एक नयी व्यवस्था तैयार की जिसे 1822 में लागू किया गया। यह व्यवस्था निम्नलिखित बातों में स्थायी बंदोबस्त से अलग थी :-

(क) गाँव के एक–एक खेत के अनुमानित राजस्व को जोड़कर हर गाँव या ग्राम समूह से वसूल होने वाले राजस्व का हिसाब लगाया जाता था।

(ख) इस राजस्व को स्थायी रूप से तय नहीं किया गया बल्कि उसमें समय–समय पर संशोधनों की गुंजाइश रखी गई।

(ग) राजस्व इकट्ठा करने और उसे कंपनी को अदा करने का जिम्मा जमींदार की बजाय गाँव के मुखिया को सौंप दिया गया।

प्रश्न 5 राजस्व निर्धारण की नयी मुनरो व्यवस्था के कारण पैदा हुई दो समस्याएँ बताइए।

उत्तर – नयी व्यवस्थाएँ लागू होने के बाद महज कुछ साल के भीतर उनमें समस्याएँ दिखाई देने लगी। जैसे:-

(क) जमीन से होने वाली आमदनी बढ़ाने के चक्कर में राजस्व अधिकारियों ने बहुत ज्यादा राजस्व तय कर दिया था। किसान राजस्व चुका नहीं पा रहे थे।

(ख) रैयत गाँवों से भाग रहे थे। बहुत सारे क्षेत्रों में गाँव वीरान हो गए थे। आशावादी अफसरों को उम्मीद थी कि नयी व्यवस्था किसानों को संपन्न उद्यमशील किसान बना देगी।

प्रश्न 6 रैयत नील की खेती से क्यों कतरा रहे थे ?

उत्तर – किसानों को नील की बहुत ही कम कीमत दी जाती थी। कर्जों का सिलसिला भी कभी समाप्त नहीं होता था। धान की खेती में बाधा–कर्जा (ऋण) देने वाले बागान मालिक चाहते थे कि किसान अपनी सबसे अच्छी ज़मीन में ही नील की खेती करें। परंतु समस्या यह थी कि नील के पौधे की जड़ें बहुत गहरी होती थीं। वे मिट्टी की सारी शक्ति खींच लेती थीं। अतः नील की कटाई के बाद वहाँ धान की खेती नहीं की जा सकती थी।

प्रश्न 7 किन परिस्थितियों में बंगाल में नील का उत्पादन धराशायी हो गया ?

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – बंगाल प्रदेश नील का सबसे बड़ा उत्पादक था। 18वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में बंगाल में नील की खेती तेजी से फैलने लगी थी। परंतु किसानों के लिए यह खेती बहुत ही दमनकारी थी। बाग़ान मालिक उनका खूब शोषण करते थे और उन पर तरह–तरह के अत्याचार करते थे। तंग आकर किसान विद्रोह पर उतर आये। मार्च 1859 में बंगाल के हजारों रैयतों ने नील की खेती करने से इंकार कर दिया। उन्होंने बाग़ान मालिकों को लगान चुकाने से भी इंकार कर दिया। वे तलवार, भाले और तीर – कमान लेकर नील की फैक्ट्रियों पर धावा बोलने लगे। स्त्रियां अपने बर्तन लेकर लड़ाई में कूद पड़ीं। बाग़ान मालिकों के लिए काम करने वालों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया। बागान मालिकों की ओर से लगान वसूली के लिए आने वाले गुमाश्ता एजेंटों की जमकर पिटाई की गई। रैयतों ने कसम खा ली कि न तो वे नील की खेती के लिए कर्जा लेंगे और न ही बाग़ान मालिकों के लाठीधारी गुंडों से डरेंगे। 1857 की बग़ावत के बाद ब्रिटिश सरकार किसी और व्यापक विद्रोह के ख़तरे से डरी हुई थी। जब नील की खेती वाले जिलों में विद्रोह की ख़बर फैली तो लेफ्टिनेंट गवर्नर ने 1859 में इन जिलों का किया। रैयतों को लगा कि सरकार उनकी दुर्दशा से परेशान है। तत्पश्चात मैजिस्ट्रेट ऐशले ईडन ने एक नोटिस किया जिसमें कहा गया था कि रैयतों को नील के अनुबंध मानने के लिए विवश नहीं किया जाएगा। इस नोटिस आधार पर लोगों में यह खबर फैल गई कि रानी विक्टोरिया ने नील की खेती न करने की आज्ञा दे दी है। ईडन किसानों को शांत करने और विस्फोटक स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा था परंतु उसकी कार्रवाई किसानों ने अपने विद्रोह का समर्थन मान लिया। सरकार को विद्रोही किसानों से बाग़ान मालिकों की रक्षा के लिए सेना बुलानी पड़ी। नील उत्पादन व्यवस्था की जांच करने के लिए एक नील आयोग भी स्थापित किया। इस आयोग ने बाग़ान मालिकों को दोषी पाया और किसानों के साथ जबरदस्ती के लिए उनकी आलोचना की। आयोग ने कहा कि नील की खेती रैयतों के लिए लाभ का सौदा नहीं है। आयोग ने रैयतों से कहा कि वे वर्तमान अनुबंधों को पूरा करें, परंतु आगे से वे चाहें तो नील की खेती बंद कर सकते हैं। इस विद्रोह के बाद बंगाल के बाग़ानों में नील का उत्पादन धराशायी हो गया।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)